Chaturvedi (Maharashtra), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Shri M. Shanmugam (Tamil Nadu), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shrimati Phulo Devi Netam (Chhattisgarh), and Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu).

Concern over deaths due to lightning in the country

डा. सुमेर सिंह सोलंकी (मध्य प्रदेश): माननीय सभापति महोदय, नर्मदे हर। महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन और सरकार का ध्यान एक महत्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं मानसून के सीजन में आकाशीय बिजली से जान-माल की होने वाली हानि के बारे में सदन को अवगत कराना चाहता हूँ।

माननीय सभापति महोदय, दुनिया में प्रत्येक वर्ष लाखों लोगों की मृत्यु आकाशीय बिजली गिरने से हो रही है। आकाशीय बिजली गिरने से हर सेकंड में 40 बार, अर्थात् दिन में करीब 30 लाख बार बिजली धरती पर गिरती है। जहाँ भारतवर्ष की बात है, यहाँ आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं की शुरुआत प्री-मानसून के दौरान होती है। विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि प्रत्येक वर्ष बिजली गिरने से लगभग 10 से 15 हजार लोगों की मृत्यु केवल जून और जुलाई के दौरान होती है, जोकि एक चिन्ता का विषय है।

माननीय सभापति महोदय, कुछ देशों में आकाशीय बिजली गिरने से होने वाली मौतों की संख्या 30 से 35 है, वहीं भारत में यह संख्या 25 से 30 हजार है, इतने लोग यहाँ आकाशीय बिजली गिरने से मरते हैं। इसे प्राकृतिक आपदा समझकर हम कभी-कभी नजरअंदाज भी कर देते हैं, जिसकी वजह से यह संख्या और बढ़ सकती है। आकाशीय बिजली के कारण भारतवर्ष में सबसे ज्यादा मौतें खुले क्षेत्रों में होती हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ की मुख्य आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि आकाशीय बिजली गिरने की दुर्घटनाएँ भी सबसे ज्यादा इन्हीं क्षेत्रों में सबसे ज्यादा होती हैं।

माननीय सभापति महोदय, आकाशीय बिजली गिरने से भारत में हर दिन औसतन 4 से 5 लोगों की मौतें हो रही हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में आकाशीय बिजली गिरने के मामले सबसे ज्यादा हो रहे हैं।

माननीय सभापति महोदय, मैं गाँव का रहने वाला हूँ। मैंने देखा है कि शहरों में कभी आकाशीय बिजली नहीं गिरती। उसके पीछे यह कारण है कि शहरों में सुरक्षा-व्यवस्था बेहतर की गई है और बेंजामिन फ्रेंकलिन के द्वारा आविष्कारित 'तड़ित चालक' शहरों में हर भवन के ऊपर लगाए गए हैं, लेकिन गाँवों में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह आग्रह करता हूँ कि आकाशीय बिजली गिरने की इन घटनाओं को रोकने के लिए गाँवों के मजरे, टोले, फलियों को सुरक्षित करने के लिए अगर हर गाँव में 'तड़ित चालक' लगाए जाएँगे, तो ये घटनाएँ रुकेंगी। चूँकि आकाशीय बिजली गिरने से होने वाली मौतें सबसे ज्यादा गाँवों में होती हैं, इसलिए यहाँ पर 'तड़ित चालक' लगाए जाने चाहिए। आकाशीय बिजली से होने वाली मौतों से प्रभावित या पीड़ित परिवार के लिए सरकार द्वारा आपदा राहत के रूप में एक निश्चित राशि घोषित की जानी चाहिए।

अलग-अलग राज्यों में यह राशि अलग-अलग है। पूरे देश में इसको राष्ट्रीय आपदा घोषित करते हुए एक ही मुआवजा राशि या सहायता राशि देने का प्रावधान होना चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, मेरे कुछ सुझाव भी थे। ...(**समय की घंटी**)... मेरे कुछ सुझाव भी थे। मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करता हूँ कि गाँवों में 'तड़ित चालक' लगा कर आकाशीय बिजली गिरने की इन घटनाओं को रोका जाए। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the Zero Hour matter raised by the hon. Member, Dr. Sumer Singh Solanki: Maharaja Sanajaoba Leishemba (Manipur), Shrimati Darshana Singh (Uttar Pradesh), Dr. Kalpana Saini (Uttarakhand), Shri Niranjan Bishi (Odisha), Shri Sanjay Raut (Maharashtra), Shrimati Geeta alias Chandraprabha (Uttar Pradesh), Shri Jose K. Mani (Kerala), Shrimati Kavita Patidar (Madhya Pradesh), Dr. Radha Mohan Das Agrawal (Uttar Pradesh), Shri Krishan Lal Panwar (Haryana), Shri S. Selvaganabathy (Puducherry), Shrimati Seema Dwivedi (Uttar Pradesh), Shrimati Sangeeta Yadav (Uttar Pradesh), Shrimati S. Phangnon Konyak (Nagaland), Shri Rambhai Harjibhai Mokariya (Gujarat), Shri R. Girirajan (Tamil Nadu), Shri Manoj Kumar Jha (Bihar), Shrimati Dharmshila Gupta (Bihar), Shri Dhananjay Bhimrao Mahadik (Maharashtra), Shri Ramji (Uttar Pradesh), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu), Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu), Shrimati Phulo Devi Netam (Chhattisgarh), Shrimati Sulata Deo (Odisha), and Dr. Sasmit Patra (Odisha).

Need to tackle the problem of plastic waste in the country

SHRI JOSE K. MANI (Kerala): Mr. Chairman, Sir, it has been two years since India banned single-use plastic. This Government, the Prime Minister emphasised on campaign of much-hyped flagship programme 'Swachh Bharat'. It is turning nearly a decade, ten years up. Where are we standing today? The Mission has completely failed. India is one of the largest producers of polymers and generates more plastic waste than any other economy, except USA and European Union.

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*)

The country produces 9.4 million tonnes of plastic waste annually, which amounts to 26,000 tonnes per day. Only about 60 per cent of the waste is recycled, leaving 3.76 million tonnes unprocessed and over 9,400 tonnes of plastic waste still ends up in landfills and pollute water sources. It is estimated that 83 per cent of the drinking